रिकॉर्डः– तू प्यार का सागर है..... ॐ पिताश्री 23/11/1965

ओम् शान्ति। यह जो अक्षर सुने कि तू प्यार का सागर है। तुम बच्चे जानते हो कि यह बाप सबसे प्यारा है। बाप को जब याद करते हो तो वर्सा भी याद आ जाता है। जिसको बाप याद आवेगा, निश्चय हो जावेगा, तो ज़रूर खुशी होनी चाहिए। यूँ तो शिव के मंदिर में भी जब जाते हैं तो शिवलिंग को शिवबाबा ही कहते हैं; परन्तु उन्हों को इतनी खुशी क्यों नहीं आती? वो तो शिवलिंग पर फूल, दूध आदि चढ़ाते हैं। तुमको तो दूध आदि चढ़ाने की दरकार ही नहीं रहती। निराकार भगवान वो तो पिता हुआ ना। भक्तों का भगवान। वो रचयिता भी है। उन्होंने इस मनुष्य सृष्टि को रचा है। यह भी गाया जाता है उनकी भक्ति करते हुए फिर भी जितना तुम बच्चों को खुशी का पारा चढ़ता है उतना और किसको नहीं चढ़ता। भगवान का नाम सुनने से ही तुम्हारे रोमांच खड़े हो जाते हैं। बुद्धि में आता है बाप से हमको बाप के घर का भी वर्सा मिलता है और बाप की मिल्कियत का वर्सा मिलता है। बाप के घर में ही जन्म लेते हैं। उसमें कोई फिरती–गिरती नहीं हो सकती। जयदाद फिर भी बाहर में इधर–उधर रहती है। भल घर भी जयदाद है; परन्तु प्रोपर्टी की फिरती–गिरती होती है। घर को इमुएबल कहा जाता। प्रोपर्टी को मुएबल कहा जाता। तुम बच्चे भी जानते हो हम बाप के घर के मालिक बनते हैं, जो कब बदल–सदल हो नहीं सकता। स्वीट होम कब बदल–सदल नहीं होगा। बाकी राजाई तो कितना बदल–सदल होती है। वो मुएबल है। वो इनमुएबल। मुक्तिधाम मुएबल है। यहाँ तो फिरती–गिरती होती है। सूर्यवंशी से चंद्रवंशी फिर वैश्यवंशी में आए। मुक्ति और फिर जीवनमुक्ति। तुम बच्चे बाप की प्रोपर्टी के मालिक बनते हो। जानते हो बाप की जो इनमुएबल प्रोपर्टी है उनके तो सब मालिक बनते हैं। बाकी जो मुएबल प्रोपर्टी है वो नम्बरवार मिलती है बच्चों को। तुमको सबसे जास्ती अच्छी प्रोपर्टी मिलती है। स्वर्ग में तुम ही राज्य करते हो। चार युग जो हैं उसमें तो भारतवासी ब्राह्मण कुल भूषण हो मुख्य। सब भारतवासी नहीं कहेंगे। जो देवी–देवता धर्म वाले हैं। सब तो सारा चक्कर लगाते नहीं। तो इस धर्म वाला कोई और किस धर्म में कनवर्ट हो गया (वो) निकल आवेगा। कनवर्ट भी बहुत होते हैं। क्रिश्चियन धर्म में, बौद्धी धर्म में बहुत चले जाते हैं। उनमें से निकल आय सकते हैं। ऐसे बहुत कनवर्ट हुए हैं। देखने में आता है कोई समय वो भी निकल आवेंगे। यह नॉलेज तो कोई भी ले सकते हैं। इस सृष्टिचक्र को जानना तो बिल्कुल कॉमन है। भल कितने भी डल हेड हैं तो भी बुद्धि में यह तो आता है ना यह सृष्टिचक्र है। फिर करके सर्वगुण सम्पन्न नहीं बन सकते हैं। ऐसे नहीं कि सृष्टिचक्र को जानने से सर्वगुण सम्पन्न बन जाते हैं। नहीं। यह तो पढ़ाई है। वो है हद की पढ़ाई, यह है बेहद की पढ़ाई। बेहद की पढ़ाई सिर्फ तुम जानते हो। तुम्हारी बुद्धि में यह रहना है कि यह चक्र कैसे फिरता है। और सब धर्म तो बाद में आते हैं। यह नॉलेज बहुत सहज है। कोई यह भी मुश्किल समझते हैं। है बहुत सहज; परन्तु फिर इतना योगी बनना, आप समान बनाना, मेहनत करने में कितना फर्क पड़ता है। कोई बी०के० तो अच्छा नाम निकालती है। सब उनको याद करते हैं। सृष्टिचक्र को तो जाना। फिर वो अवस्था भी चाहिए ना। सर्वगुण सम्पन्न बनने में अच्छी मेहनत लगती है। कोई ना कोई अवगुण निकल पड़ता है। खुद (भी) कहते हैं मेरे में मीठा बोलने का गुण नहीं है। पुरुषार्थ करना पड़ता है। एम–ऑब्जेक्ट तो सीधी है। बाबा ने कल रात को भी समझाया कि तुम यह लिख सकते हो हम 5000 वर्ष पहले मुआफिक फिर से यह राजयोग सीख रहे हैं। कहाँ भी प्रदर्शनी हो वा प्रोजेक्ट्स दिखाया जाए तो यह वण्डरफुल बात ज़रूर लिखनी चाहिए कि 5000 वर्ष पहले मुआफिक फिर तुमको इस प्रदर्शनी द्वारा राजयोग सीखने लिए युक्ति बताई जा रही है। बाप कहते हैं कि 5000 वर्ष पहले मुआफिक तुम श्रीमत द्वारा यह पुरुषार्थ कर रहे हो। वो तो कहते हैं कल्प ही आयु लाखों वर्ष है। कलियुग तो अजन बच्चा है और तुम कहते हो हम 5000 वर्ष पहले मुआफिक दैवी स्वराज्य पद पाने लिए यह पुरुषार्थ कर रहे हैं। तो मनुष्य वण्डर खावेंगे यह क्या लिखती है 5000 वर्ष पहले मुआफिक...। फिर चक्कर का राज़ समझाना पड़े कि यह 5000 वर्ष का चक्कर है। अगर कहें सतयुग को लाखों वर्ष हुए; परन्तु वो देवताओं की इतनी आदमशुमारी कहाँ है? हिन्दुओं की आदमशुमारी कम निकलती है। हिन्दू और–2

धर्मों में कनवर्ट हो गए हैं। हिन्दुओं से कितने मुसलमान बने होंगे। उनको शेख कहते हैं। ऐसी भी बहुत हैं। कोई भी अपन को आदि सनातन देवी–देवता धर्म का मानते ही नहीं हैं। आदि सनातन हिन्दू धर्म कह देते हैं; परन्तु हिन्दू धर्म तो आदि सनातन था नहीं। तुम अख़बार में भी डाल सकते हो। मैगज़ीन की बात नहीं। अख़बारें तो लाखों के अंदाज़ में छपती है। हाँ, वो पैसे बहुत लेते हैं। समझाने से वो डाल सकते हैं। चक्कर भी डाल सकते हैं। बाबा ने जो प्रश्न लिखा है गीता का भगवान कृष्ण वा शिव? वो भी अख़बार में डाल सकते हैं। कब खर्चा पर डालते हैं, कब लोन भी देते हैं। अच्छी बड़ी अख़बार में डालें तो 500 रुपया शायद लेंगे; परन्तु मुश्किलात यह है एक दिन डालेंगे। बस। हमेशा पड़े तब मनुष्यों की आँख खुले। एक बार डाला कोई ने पढ़ा ना पढ़ा, रोज़ पड़ने से मनुष्यों की आँख खुलेगी। तब आकर ज्ञान को समझे। फिर पुरुषार्थ करने में भी कितनी मेहनत लगती है। बहुत माया के तूफान आते हैं। मेहनत है अख़बार में डालना, प्रदर्शनी करना। प्रदर्शनी तो एक गाँव में होगी। अख़बार तो सब तरफ जाती है। सारा दिन खयालात चलते रहते हैं। वजन करना पड़ता है क्या–2 जाए, कैसे सर्विस को बढ़ाया जाए। तुम हो सच्चे–2 खिदमतगार बच्चे। सोसाइटी की सर्विस करना यह खिदमत है ना। तुम बच्चे जानते हो वो सब राक्षस आसुरी सोसाइटी है। अब उनको दैवी सोसाइटी बनाना है। सारी दुनिया की सोसाइटी को स्वर्ग में पहुँचाना है। दुनिया का बेड़ा गर्क है। दुनिया बहुत स्वर्ग थी। अब नर्क बन गई है। यह चक्कर फिरता रहता है। ड्रामा है ना। जब स्वर्ग है तो नर्क नहीं। कहाँ गया? नीचे। ड्रामा को फिर फिरना है। यह चैतन ड्रामा है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड जो एक्ट करते हैं सब कल्प पहले मुआफिक ड्रामा प्लैनअनुसार करते हैं। पुरुषार्थ भी हम ड्रामा अनुसार करते हैं। यह तुम्हारी बुद्धि में है। और तो कुछ भी नहीं समझ सकते। ड्रामा को समझ जावें तो फिर यह बातें ठहर ना सके। यह कल्प लाखों वर्ष का है। स्वास्तिका भी ठीक निकला हुआ है। स्वास्तिका की पूजा भी करते हैं; परन्तु उनको तो यह पता नहीं है कि क्या चीज़ है। जर्मनी में हिटलर का भी यह निशान था। अर्थ कुछ भी नहीं। तो यह चक्कर समझाना पड़ता है। तुम्हारी बुद्धि में यह चक्कर फिरता रहता है। तुम मास्टर ज्ञान सागर हो। खुशी भी होती है। तुमको तो बहुत खुशी होनी चाहिए। तुम कहते हो हम मनुष्य से देवता, नर से नारायण बनते हैं। यह राजयोग है। यह त्रिमूर्ति का चित्र तो सारा दिन बुद्धि में रहता है। ब्रह्मा द्वारा विष्णु पुरी की राजाई मिलती है। शंकर द्वारा यह आसुरी सृष्टि खलास होनी है। बस। बुद्धि में यही खयालात चलती रहे। बहुत खुशी में रहना होता है। बाबा लॉकेट भी बनवा रहे हैं, जिससे तुम बहुत सहज रीति समझा सकते हो। बैग्स में भी यह चित्र लगवा सकते हो त्रिमूर्ति और चक्कर। यह तो सब लगाना ज़रूरी है। यह (बैग) सर्विस के लिए ही दी जाती है। सेन्सीबुल इस पर जाकर अच्छा समझावेगा। भल ल०ना० के चित्र में और सब है, कृष्ण का भी है। सिर्फ चक्कर नहीं है। एक चित्र में सब चीज़ें कहाँ तक डाल सकते हैं। इसलिए वो फिर समझाया जाता है। बाबा की बुद्धि सारा दिन चलती ही रहती है। ल०ना० का मंदिर बहुत अच्छा बनाते हैं। कृष्ण के भी अच्छे–2 बने हुए हैं; परन्तु यह किसको भी पता नहीं है कि यह राधे–कृष्ण, ल०ना० कौन हैं? तुमको अब कितनी नॉलेज मिली है। कितनी खुशी होनी चाहिए। कहाँ भी जाए तुम सर्विस कर सकते हो। श्रीनाथ द्वारे में भी जाकर समझाय सकते हो। ट्रस्टी लोग को समझाओ। कास्केट ले कोई भी बड़े आदमी को खोल कर बैठ समझाने से बहुत खुशी हो(गी)। समझेंगे यह तो जैसे भगवान स्वयं रूप धारण कर समझा रहे हैं। कोई–2 बच्चों में सर्विस का हिरस है; परन्तु बड़ों–2 पास जाती नहीं हैं। कहाँ भी जाए तुम मुलाकात कर सकते हो। खर्चे की बात नहीं है। पहले तो वह समझेंगे यह कुछ शायद लेने आई है। सर्विस के लिए अनेक प्रकार की युक्तियाँ रचनी चाहिए। नहीं तो टाइम वेस्ट जाता है। हरेक को अपनी दिल से पूछना चाहिए। बहुत रहमदिल बन बहुतों का कल्याण करना है। ज्ञान का स्वाद नहीं तो वो रहमदिल पने का नशा नहीं आता। नहीं तो तुम जैसी बहुत अच्छी–2 सर्विस कर सकती हैं। बाबा युक्तियाँ तो बहुत बतलाते हैं। धारणा (अधूरी मुरली)